प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

चारा उत्पादन एवं साइलेज बनाने के लिए छः–दिवसीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण का आयोजन

विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय द्वारा रीप एवं आईफैड के सहयोग से चारा उत्पादन एवं साइलेज बनाने हेतु जुलाई 22 से 27, 2024 के मध्य एक छः दिवसीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण मास्टर्स ट्रेनर्स हेतु आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के 13 जिलों से कृषि विभाग के जनपद एवं विकास स्तर के अधिकारी प्रतिभाग कर रहे हैं जो कि आगे चलकर चारा उत्पादन की वैज्ञानिक विधि एवं साइलेज बनाने हेतु कृषकों को प्रशिक्षित करेंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने दुग्ध उत्पादन में गुणवत्ता चारा की उपलब्धता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पहाड़ में गाय एवं भैस रखने की परम्परा रही है जोकि छोटे जोत में आर्थिक सहयोग करती है। महिलाओं का पर्वतीय कृषि में विशेष योगदान रहा है। अतः प्रशिक्षण कार्यक्रम में उनकी भागीदारी भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब हम पशु से जुड़ते है तो उनकी समस्याओं के बारे में पता चलता है। हरे–चारे के साथ सूखा चारा मिश्रित कर दुधारू पशुओं को देने से उनकी प्रोटीन की मांग पूरी होती है। केवल हरा अथवा सूखा चारा नहीं देना चाहिए। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए तीन बातों का क्रमशः महिलाओं की भागीदारी, कृत्रिम गर्भाधान और कृमिनाशी के उपयोग पर उनके द्वारा बल दिया गया। उन्होंने कहा कि कृत्रिम गर्भाधान से जहां एक ओर दुधारू पशु समय से ब्यात के लिए तैयार हो जाता है वहीं पर कृमिनाशी दवाओं को देने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और उत्पादकता में वृद्धि होती है। शत–प्रतिशत कृत्रिम गर्भाधान करने से दुग्ध उत्पादन चार गुना तक बढ़ सकता है और नियमित कृमिनाशी दवाओं को देने से 20 प्रतिशत तक दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। कृमिनाशी दवाएं गायों एवं भैसों के अतिरिक्त बकरियों के वजन बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होती हैं। उन्होंने प्रतिभाग कर रहे प्रशिक्षणार्थियों को सुझाव दिया कि प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा जो भी बताया जाएगा उसको पूरी तन्मयता के साथ ग्रहण कर चारा उत्पादन और साइलेज बनाने हेतु किसानों के बीच जाएं।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक शोध डा. अजीत सिंह नैन द्वारा मुख्य अतिथि तथा श्री विपिन मंडवाल, आईफैड के प्रतिनिधि को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। डा. नैन ने मास्टर्स ट्रेनर्स हेतु आयोजित कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि देश में हरा चारा और सूखा चारा दोनों की कमी है। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए चारे के उत्पादन में वृद्धि अति आवश्यक है। इस समय भारत में 230.6 मिलियन टन दुग्ध उत्पादन होता है और उत्तराखण्ड में यह 1.8 मिलियन टन है। उत्तराखण्ड की दुग्ध उत्पादकता देश की दुग्ध उत्पादकता से कम है, अतः इस प्रशिक्षण से मास्टर्स ट्रेनर्स द्वारा कृषकों को उन्नत विधि से चारा उत्पादन और साइलेज बनाने में सहयोग किया जाएगा। श्री विपिन मंडवाल ने कहा कि रीप एवं आईफैड का प्रशिक्षण आयोजित करने में वित्तीय सहयोग है और पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा प्रशिक्षण आयोजन करने हेतु उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर मास्टर्स ट्रेनर्स हेतु चारा उत्पादन एवं साइलेज निर्माण के ऊपर तैयार किये गये मैनुअल का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. अनिल कुमार संयुक्त निदेशक शोध द्वारा किया गया और डा. योगेन्द्र सिंह प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग एवं समन्वयक द्वारा सभी का प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में प्रतिभाग करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर निदेशक संचार डा. जे.पी. जायसवाल एवं शोध निदेशालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के संयुक्त निदेशक एवं प्रभारी अधिकारी उपस्थित थे।

2: कार्यक्रम में मैनुअल का विमोचन करते कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान।

निदेशक संचार